IJCRM
International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Review Article

कामायनी का प्रतिपाद्य: जीवन दर्शन एवं मूल्य

डॉ. विजय आनन्द मिश्र [1*]

[1]सहायक आचार्य (हिन्दी), जवाहरलाल नेहरू स्मारक पी.जी. कॉलेज, उत्तर प्रदेश

Corresponding Author: * **डॉ. विजय आनन्द मिश्र**

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10701616

सारांश

इस शोध पत्र में, प्रसिद्ध हिंदी कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित महाकाव्य कामायनी में संग्रहित दार्शनिक और नैतिक आयामों की खोज की गई हैं। कामायनी के माध्यम से प्रसाद, विद्यमान मौजूदा और नैतिक दृष्टिकोणों का अध्ययन करते हैं, जो जीवन, मानव मूल्यों, और सामाजिक नियमों की गहराई में छिपे हैं। कामायनी के विषयों, पात्रों, और प्रतीकात्मक तत्वों के विस्तृत विश्लेषण के माध्यम से, यह अध्ययन कामायनी में संगृहीत दार्शनिक विचारों और नैतिक शिक्षाओं के जटिल स्तरों को उन्मुख करने का प्रयास करता है। यह अध्ययन समकालीन समाज में इसके महत्व और इसके स्थायी साहित्यिक महत्व का अध्ययन करके, कामायनी द्वारा प्रदान की गई गहरी दार्शनिक और नैतिक सीखों को समझने में मूल्यवान अंशों को प्रस्तुत करता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 15-01-2023
- **Accepted:** 21-02-2023
- **Published:** 24-02-2024
- **IJCRM:**3(1);2024:188-193
- **©2024, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Manuscript

डॉ. विजय आनन्द मिश्र. कामायनी का प्रतिपाद्य: जीवन दर्शन एवं मूल्य. International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary. 2024; 3(1): 188-193.

कूट शब्द: कामायनी, जयशंकर प्रसाद, हिंदी कविता, प्रेम, भक्ति, समाज, धार्मिकता, संस्कृति, दर्शन, मूल्य

प्रस्तावना

जयशंकर प्रसाद की रचना कामायनी में मानव जीवन की सच्ची झांकी दिखाई देती है। इसमें मानव मूल्य के विविध आयाम अनायास ही देखने को मिलते हैं। कामायनी काव्य प्रसाद जी की आधुनिक कृति है इसमें प्रसाद जी यद्यपि भारतीय भी हैं और उसकी प्राचीन संस्कृति प्रेमी के रूप में दिखाई देते हैं, परंतु कामायनी में उन्होंने नवीन वैज्ञानिक तथ्य कारी यथेष्ट उपयोग किया है। यही विशेषता के कार्य को आधुनिकता प्रदान करती है प्रसाद जी ने कामायनी के नायक और नायिका। मनु और कामायनी का स्वरूप वैज्ञानिकता पर स्थिर किया है। पुरुष और नारी की विज्ञान सम्मत प्रकृति और प्रवृत्ति का चित्रण कामायनी के रूप में करने की चेष्टा की है। पुरुष और नारी प्रक्रिया क्या है ?सभ्यता इतिहास और परंपरा के आवरण को अलग कर देने पर क्या रह जाते हैं ? यही कामायनी और मनु के स्वरूपों में दिखाया गया है। कामायनी में कवि विज्ञान सम्मत चित्रण द्वारा जीवन के स्वरूप और उसकी प्रेरणा की परीक्षा करना और उसके तत्वों पर प्रकाश डालना चाहता है। आज का मनुष्य और आज की तारीख का इतिहास की उसमें प्रगति और संस्कारों का मेल हो गया है। इसलिए समय ऐतिहासिक और कारगर आवरण के बाहर जाकर उसमें विद्यमान प्रवृत्तियों के उद्घाटन में प्रसाद जी संलग्न हुए हैं। नवीन विज्ञान का कहना है कि मनुष्य की वास्तविक प्रकृति का परिचय और परिज्ञान तथा प्रकृति के आधार पर उसकी जीवन विधान का निरूपण मानव के लिए आवश्यक है। प्रसाद जी कामायनी काव्य में इस तथ्य को मानकर मूल मानव प्रकृति के उद्घाटन में प्रवृत्त हुए हैं जिसमें मानव जीवन के विविध रुप अलग-अलग ढंग से इसमें उपस्थित हुए हैं।

कामायनी पूर्णरूपेण मनोवैज्ञानिक आधार पर खड़ी है जिसमें मनु मनुष्य का परिचायक है और उसके 15 सर्ग उस मनुष्य की अलग-अलग भावनाएं हैं। जिनके आधार पर कोई भी मानव अपने नैसर्गिक क्रियाओं का संपादन करने में सक्षम होता है।

© 2024 डॉ. विजय आनन्द मिश्र. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND) https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

इस महाकाव्य में जो शीर्षक दिए गए हैं वे प्रायः मानसिक वृक्तियों के आधार पर हैं। कामायनी के प्रथम सर्ग चिंता की विवेचना करते हुए डॉक्टर नंददुलारे वाजपेई लिखते हैं, "प्रलय के पश्चात सृष्टि के नव निर्माण की समस्या मनु के सामने आई। वह अतीत का लेखा लगाता और भावी की चिंता करता है।यह चिंता या आत्म चेतना मनुष्य की वह मूल वृत्ति है जो उसे शेष प्राणी जगत से भिन्न और श्रेष्ठ पद प्रदान करती है। मनुष्य को छोड़कर अन्य प्राणियों में यह शक्ति नहीं होती। प्रसाद जी ने इसी प्रमुख विशेषता को लेकर चिंता सर्ग का निर्माण किया है। चेतना या चिंता मनुष्य की मनुष्यता की प्रथम मौलिक वृति है इसीलिए वह कामायनी का प्रथम सर्ग में शीर्षक बनकर आई है।"[1] कामायनी का प्रथम सर्ग चिंता है जिसके माध्यम से जयशंकर प्रसाद ने मानव जीवन में उत्पन्न होने वाली विविध प्रकार की समस्याओं एवं बाधाओं का काल्पनिक वर्णन प्रस्तुत किया है अर्थात उन समस्याओं की उत्पत्ति और प्रभाव पर चिंता सर्ग के माध्यम से अपनी एक दृष्टि उपस्थित की है जो मानव जीवन की सच्चाई को व्यक्त करने में एक सार्थक कदम के रूप में हिंदी साहित्य के इतिहास में दिखाई देता है। इसी क्रम में आत्म चेतना या चिंता के पश्चात मानव को उसके कर्म क्षेत्र में आगे बढ़ाने वाली दूसरी वृत्ति आशा है जो कामायनी में द्वितीय सर्ग के रूप में सामने आती है। इस सर्ग के माध्यम से जयशंकर प्रसाद जी ने बताने का प्रयास किया गया है कि आशा विकास उन्मुख वृत्ति है और उसका परिणाम सर्वथा सुखात्मक होता है। प्रमुख रूप से आशा ही मनुष्य को और उसके कार्यक्षेत्र को आगे बढ़ाने में काम करती है। आशा या सुख की अभिलाषा न केवल मानव जीवन का प्रमुख लक्ष्य है अपितु यह जीवन को प्रगति या प्रेरणा देने वाला मुख्य उपादान के रूप में हमारे जीवन में सम्मिलित होता है।

आशा मनुष्य को जीवन विकास को प्रेरणा देती है परंतु जीवन विकास का वास्तविक आधार बिंदु श्रद्धा है क्योंकि आशा जीवन में प्रविष्ट कराती है और कर्म की प्रेरणा देती है परंतु जीवन का मूल तत्व श्रद्धा है जिसमें मानव जीवन की प्रमुख वृत्ति छिपी हुई है। जयशंकर प्रसाद ने श्रद्धा सर्ग में श्रद्धा को एक नायिका के रूप में प्रस्तुत किया है जिसमें श्रद्धा का मनोवैज्ञानिक स्वरूप भी अंकित हुआ है और उसे नारी प्रतीक के रूप में भी उपस्थित किया है। मनोविज्ञान का विवेचन करते समय हम श्रद्धा को मानसिक वृत्त के रूप में ही लेंगे क्योंकि श्रद्धा ही मनु अर्थात मानव को सृष्टि के उद्देश्य का बोध कराती है जैसे कामायनी में एक जगह श्रद्धा सर्ग में ही प्रसाद जी ने लिखा हैं-

"और यह क्या तुम सुनते नहीं विधाता का मंगल वरदान
शक्तिशाली हो विजई बनो विश्व में गूंज रहा जय गान"

यह श्रद्धा मनु को उसकी वास्तविक शक्ति को स्मृति कराती हुई कहती है। साथ ही मनु को प्रवृत्ति का संदेश देती है। शक्ति संचय कर जीवन में सफलता प्राप्त करने को प्रेरित करती है। जीवन के कर्म क्षेत्र की सफलता ही मानव चेतना की सफलता है।मनुष्य जीवन का चरम उद्देश्य इसी चेतन तत्व का अधिकाधिक प्रसार और विस्तार करना है। मनुष्य अपने लक्ष्य को इसी शब्द आरोपी वृत्ति के कारण ही प्राप्त करने में सफल होता है। मानव की समस्त प्रगति विकास और विस्तार श्रद्धा द्वारा ही संभव है। श्रद्धा के स्वरूप को और भी स्पष्ट करने के लिए प्रसाद ने कामायनी के चतुर्थ सर्ग "काम" की योजना की। काम श्रद्धा का पिता है। प्रसाद जी ने काम को सृष्टि के विकास में अत्यंत उपयोगी मानकर प्रतिष्ठित किया है। काम की यह कल्पना वैदिक है। बौद्धों के दार्शनिक विवेचन में भी काम या सोमनस्य की विशेषता दिखाई गई है। मन की स्वस्थ और विकासशील अवस्था का साधन काम ही है। कामना नाटक में भी प्रसाद ने इसका उल्लेख किया है। कामना ही इस नाटक की नायिका है। उसमें तथा' कामायनी 'की नायिका" श्रद्धा "में मनोवैज्ञानिक तथा दार्शनिक स्वरूप का साम्य है। स्पष्ट है कि प्रसादजी के मन में कामना का स्वरूप इस काव्य रचना के पूर्व ही वर्तमान था। कामायनी में काम अपनी पुत्री श्रद्धा (कामायनी या कामना) को मनु को समर्पित कर संदेश देता है कि तुम मेरी पुत्री के सहयोग से ही जीवन के समस्त लाभ प्राप्त कर सकते हो। यही वह अपनी प्रवृत्तिमूलक दार्शनिकता का निर्देश करता है–

"यह नीड़ मनोहर कृतियों का या विश्वकर्म रंग स्थल है
परंपरा लग रही है ठहरा जिसमें जितना बल है"[2]

इसके आगे वासना स्वर्ग से लेकर निर्वेद तक पांचवें एवं छठे सर्गों में प्रसाद जी ने मनु के निरंतर जीवन के वास्तविक उद्देश्य को खोकर विपथ में जाते दिखाई देते हैं। श्रद्धा सर्ग में मनु को श्रद्धा प्राप्त तो हुई परंतु मनु वास्तव में श्रद्धा का यथार्थ स्वरूप पहचानने और उसका उचित मूल्यांकन करने में असमर्थ रहे जिसके परिणाम स्वरूप वह विविध प्रकार की समस्याओं एवं बाधाओं से युक्त हो जाते हैं। श्रद्धा के स्वरूप के अपरिचय से ही मनु हो वासना के कंदर्प में फंसना पड़ा। इस ओर मनु में वासना जगती है, स्वार्थ या भोग वृत्ति पैदा होती है, उस और नारी (श्रद्धा) में लज्जा का उदय होता है! लज्जा ही नारी को संयम, त्याग और समर्पण की शिक्षा देती है। नारी अपना भविष्य समझने में असमर्थ है। वह संकल्प विकल्प में पड़ी है। वह अपने अस्तित्व के वास्तविक उद्देश्य को समझना चाहती है और वह असमर्थ है इस तथ्य को कामायनी के माध्यम से जयशंकर प्रसाद ने अत्यंत ही यथार्थ पूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया-

"क्या कहती हो ठहरो नारी संकल्प- अश्रुजल से अपने
तुम दान कर चुकी पहले ही, जीवन के सोने से सपने।
नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग -पग -तल में,
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।
* * * * * * *
आंसू से भीगे अंचल पर मन का सबकुछ रखना होगा,
तुमको अपनी स्मित रेखा से या संधि- पत्र लिखना होगा।"

नारी के संबंध में प्रसाद की यह दार्शनिक चिंतन इस तथ्य को उजागर करता है कि कामायनी में जिस नारी का चित्रण हुआ है वह प्रकृति है और मनु देवता के रूप में चित्रित होता हैं जबकि वास्तविकता यह है कि पुरुष और स्त्री का पारस्परिक समन्वय ही मानव जीवन को उत्तम शिखर पर ले जाता है। जहां पर मानव जीवन विविधता में एकता की संस्कृति को स्थापित करता है। और मंगल विधान की स्थापना करने के लिए सुख की परिकल्पना से युक्त होता है। साथ ही उसे प्राप्त करने के लिए विविध प्रकार के भौतिक एवं आध्यात्मिक उपक्रम भी करता है। प्रसाद की इस तरह की वैज्ञानिक चिंतन धारा न केवल कामायनी में अपितु उनकी सभी कविताओ में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है क्योंकि सामाजिक मान्यता है कि मानव जीवन एकपक्षीय नहीं हो सकता उस के विविध आयाम ही मनुष्य को सृष्टि की अनुपम कृति के रूप में उपस्थित करता है।

कामायनी में वासना सर्ग के बाद कर्म सर्ग की परिकल्पना प्रसाद जी के जीवन दर्शन के उत्स को दिखाता है जिसके कारण मानव जाति अपनी सार्थकता को तय करती है। इस चुनाव में मनु अपने को कर्म यज्ञ में लगाते हैं जिससे सृष्टि निर्माण का मार्ग जो अनिर्णय की स्थिति में था। वह कर्म के कारण निर्णायक स्थिति में पहुँचता है। "यहां कर्म से प्रसाद जी का अभिप्राय याज्ञिक या हिंसात्मक कर्म से है। कर्म के आबाध प्रवाह में डालने वाली प्रगति वासनाजन्य अतृप्ति ही है। किलात और आकुलि नामक असुर पुरोहित मनु को हिंसात्मक कार्यो में परिणित होती है। कर्म का ही अतिवादी रूप है सत्ता को अधिकृत करने की चेष्टा, आत्म-विस्तार व अपने को अधिकारी बनाने का उद्योग। ज्यों-ज्यों मनु में हिंसात्मक कार्यों की प्रवृत्ति बढ़ती है, वह अनेक मानसिक दुर्वृत्तियों से आक्रांत होते हैं।" [3]

© 2024 डॉ. विजय आनन्द मिश्र. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND) https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

कामायनी में एक स्थान पर वर्णित है जब ईर्ष्या की उत्तेजना में मनु घर बार पत्नी सब कुछ छोड़कर अज्ञात दिशा में निकल पड़ते हैं वहीं से मनु नामक मनुष्य बुद्धि वादी बनकर सारस्वत प्रदेश में पहुंचते हैं और वहां पर ज्ञान रूपी ईड़ा से मुलाकात होती है ।सामान्य रुप से देखा जाय तो हिंसाप्रिय और ईर्ष्यालु मनुष्य बुद्धिवादी बन ही जाता है। सारस्वत प्रदेश के नवनिर्माण का जो चित्रण प्रसाद ने किया है। वह आज के विज्ञान वादी संसार से मिलता जुलता है। प्रसाद की दृष्टि में यह बुद्धिवाद, विज्ञान वाद या भौतिकवाद मनुष्य के स्वस्थ और स्वाभाविक विकास में बाधक है। बुद्धिवाद से ही कामायनी में मनु में प्रत्यावर्तन होता है। वे बुद्धि की इसी विभीषिका से ऊपर नए सिरे से श्रद्धा के पथ पर चलने का उपक्रम करते हैं। निर्वेद सर्ग में उन्हें अपने कार्यों पर ग्लानि होती है फिर उन्हें वास्तविक तत्व का दर्शन होता है। यह दर्शन ही अस्थाई अनुभूति बनकर रहस्य रूप में पारित होता है।यही रहस्य कामायनी के जीवन दर्शन को स्पष्ट करता है जिसमें तत्व को जीवन में आत्मसात कर लेने से मनु अर्थात मनुष्य को जीवन के वास्तविक स्वरूप की झलक दिखाई देती है। साथ ही मनु को सम्पूर्ण जीवन की सार्थकता की और अखण्ड आनन्द की अनुभूति होती है। जीवन का चरम परिणाम और उच्चतम लक्ष्य यही है। भारतीय दर्शन में जो आनन्दवाद है, उसी का नया उद्घाटन प्रसाद ने कामायनी के अंतिम सर्ग आनन्द है।

प्रसाद की कामायनी में मनु और श्रद्धा की कथा तो है ही साथ ही मनुष्य के क्रियात्मक बौद्धिक और भावात्मक विकास में सामंजस्य स्थापित करने का अपुर्व काव्यात्मक प्रयास भी है। प्रसाद की कामायनी पर गम्भीरता पूर्वक विचार करते हैं तो यह निष्कर्ष सामने आता है कि मानव-प्रकृति के शाश्वत स्वरूप की झलक भी इसमें मिलेगी। आध्यात्मिक और व्यावहारिक तथ्यों के बीच संतुलन स्थापित करने की सर्वप्रथम चेष्टा इस काव्य में की गई है। इस कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए माननीय वस्तुस्थिति से परिचय रखने वाली जिस मर्मभेदिनी प्रकृति की आवश्यकता है वह प्रसादजी को प्राप्त थी। उन्होंने अपनी प्रतिभा के बल से शरीर मन और आत्मा; कर्म, भावना और बुद्धि; क्षर, अक्षर और उत्तम तत्वों को सुसंगठित कर दिया है। यही नहीं उन्होंने इन तीनों के भेद को मिटाकर इन्हें पर्यायवाची भी बना दिया है। जो मनु और कामायनी है वह आधुनिक पुरुष और नारी भी हैं। यही नहीं, शाश्वत पुरुषत्व और नारीत्व भी वही है। एक की बन सब की साधना बन जाती है। मनोविज्ञान में काव्य और काव्य में मनोविज्ञान यहां एक साथ दिखाई देती है। मानस का ऐसा विश्लेषण और काव्यात्मक निरूपण हिंदी में शायद शताब्दियों के बाद हुआ है।"[4]

कामायनी में निहित समरसता का सिद्धांत:

कामायनी के दार्शनिक पक्ष पर विचार करने पर ज्ञात होता है कि मानव जीवन की समस्त जटिलताओं का सार इसी समरसता सिद्धांत के विवेचन में परिलक्षित होता है। मानव जीवन आज अनेकानेक जटिलताओं और वैषम्यों से ग्रस्त है। उन जटिलताओं का दिग्दर्शन कराना और उनके निवारण का उपाय आज के क्रान्तिदर्शी कवि का ही कार्य है। कामायनी में जीवन के विरोधों का उल्लेख करने में जयशंकर प्रसाद ने सूक्ष्म वैज्ञानिक दृष्टि से काम लिया है। उन विरोधों का परिहार भी वैज्ञानिक आधार पर किया गया है। इसके लिए उन्होंने प्राचीन भारतीय दर्शन का उपयोग किया है और विशेषकर उसके समन्वय प्रधान स्वरूप का आधार लिया है। कामायनी में यह समन्वयात्मक दर्शन समरसता के नाम से अभिहित है। इस सिद्धांत का उल्लेख कामायनी में अनेकों स्थानों पर किया गया है। जीवन का एक मुख्य वैषम्य सुख-दु:ख सम्बन्धी है। प्रसाद जी ने सुख और दु:ख की द्विविधा का निराकरण इन मार्मिक शब्दों में किया है-

"जिसे तुम समझे हो अभिशाप जगत् की ज्वालाओं का मूल।
ईश का वह रहस्य वरदान, कभी मत इसको जाओ भूल।
* * * * * * *
नित्य समरसता का अधिकार, उमड़ता कारण जलधि समान,
व्यथा की नीली लहरों बीच, बिखरते सुख मणिगण द्युतिमान।" [5]

कामायनी के माध्यम से जय शंकर प्रसाद जी ने यह बताने का प्रयास किया है कि मनुष्य अपनी आकांक्षाओं के वशीभूत होकर अपने जीवन में सदैव असंयम का परिचय देता हुआ विविध प्रकार की समस्याओं से ग्रसित होता रहता है जिसके परिणाम स्वरूप उसका जीवन विभिन्न प्रकार के संकटों से युक्त हो जाता है। जिससे वे उन समस्याओं के समाधान में अपनी समस्त ऊर्जा का उपयोग करने लगते हैं और जीवन का शेष और महत्वपूर्ण हिस्सा कुछ समय के लिए छूट सा जाता है। ऐसी स्थिति में कामायनी में समरसता के दार्शनिक पक्ष को महत्वपूर्ण रूप में स्वीकार किया गया है जिससे मानव जाति विविध प्रकार की विपरीत आक्रांताओं से इस सिद्धांत को अपनाने के कारण बच जाता है। संपूर्ण कामायनी में जयशंकर प्रसाद जी ने मनु को यह समझते हुए दिखाई देते हैं कि सृष्टि केवल मनुष्य और उसकी सत्तावादी चिंतन धारा से निर्मित नहीं हो सकता है। बल्कि उसके जीवन का बहुत ज्यादा हिस्सा नारी के सह अस्तित्व पर टिका हुआ है क्योंकि मानव जीवन का तीन चौथाई हिस्सा नारी के ही बुद्धि और विवेक पर निर्भर है। जिससे मनुष्य और उसकी मनुष्यता पूरी तरह से संरक्षित हो पाती है। प्रसाद ने कामायनी में जीवन दर्शन के उन तमाम तथ्यों को उजागर करने का सार्थक प्रयास किया है जिससे मानव और मानवता पूरी सामाजिकता के साथ अपने जीवन का आनंद लेते हुए दिखाई दें।

अधिकारी और अधिकृत शासक और शासित के बीच भी सदा से एक दुर्भाग्य खाई रही है जिसने संसार में महान उत्पीड़न होते हैं। इन दोनों में अनियंत्रित संबंध रहने के कारण ही इतिहास के पृष्ठ रक्तरंजित हुए हैं। यदि प्रसाद जी ने इस द्वैत के निर्मूलन के लिए अधिकारी या सत्ताधारी को ही समाप्त कर देने का संदेश नहीं दिया है (एक दार्शनिक के नाते प्रसाद जी इस बात का नितांत अभाव मारने में असमर्थ थे) परंतु इस ऐतिहासिक द्वंद को भी समरसता द्वारा शांत करने का मार्ग निर्देश किया है–

"तुम भूल गए पुरुषत्व मोह में, कुछ सत्ता है नारी की,
समरसता है संबंध बनी, अधिकार और अधिकारों की।" [6]

मनु द्वारा ईड़ा के सहयोग से सारस्वत प्रदेश में अनेक मानव वर्गों का उदय और परस्पर संघर्ष होता है ,जो बुद्धि वाद की एकांगिता का परिचायक है। आधुनिक सभ्यता इसी बुद्धिवादी आधार पर प्रतिष्ठित है। प्रसाद जी इस खतरे को पूरी तरह समझते थे। श्रद्धा-विरहित समाज-योजना के दुष्परिणामों से अवगत थे। मनु का अपनी प्रजा से संघर्ष और सारस्वत प्रदेश का विद्रोह इसी एकांगी बुद्धिवाद का निर्देशक है। इस समस्या का भी समाधान प्रसाद जी कामायनी में करते हैं-

"यह तर्कमयी तू श्रद्धामय, तू मननशील कर कर्म अभय,
इसका तू सब संताप निचय, हर ले, हो मानव भाग्य उदय।
सब की समरसता कर प्रचार, मेरे सुत सुन माँ की पुकार।" [7]

जयशंकर प्रसाद जी ने कामायनी के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि जीवन की दो धाराएं हैं -एक धारा सुख का संधान करती है और दूसरी धारा दुख को निर्मित करती है। इस प्रकार इन दोनों ही धाराओं के पारस्परिक समन्वय से ही जीवन का वास्तविक स्वरूप उभर कर सामने आता है। इन्हीं के निर्धारण के क्रम में जीवन के संपूर्ण क्रिया व्यापार संचालित होते हैं जिसके अंतर्गत कुछ मनुष्यों में सुख का चरम उत्कर्ष मिलता है तो कुछ में दु:ख विषमता के रुप में खुलकर सामने आता है। प्रसाद ने अपनी कामायनी में सुख और दु:ख की दुविधा का निराकरण करते हुए लिखते हैं–

"जिसे तुम समझे हो अभिशाप जगत की ज्वालाओं का मूल।
ईश का वह रहस्य वरदान, कभी मत इसको जाओ भूल।

© 2024 डॉ. विजय आनन्द मिश्र. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND) https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

* * * * * * *

नित्य समरसता का अधिकार, उमड़ता कारण जलधि समान,
व्यथा की नीली लहरों बीच, बिखरते सुख मणिमय द्युतिमान।" [8]

कामायनी में मानव संबंधों में आकांक्षा और तृप्ति का विवेचन भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। आकांक्षाओं का अंत नहीं है और तृप्ति अतिशय दुष्प्राप्य है। इसका पूरा समाधान कामायनी के माध्यम से जयशंकर प्रसाद जी ने प्रस्तुत किया है जिसके अंतर्गत इच्छा या आकांक्षा को प्राप्त कर उसके समन्वय का आदेश दिया गया है जबकि निजी जीवन में इच्छा या आकांक्षा को दूर करने के लिए मानसिक योग का निर्माण किया गया है। इस प्रकार कामायनी के माध्यम से कवि ने जीवन का सरल एवं सुगम समाधान प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि कामायनी में निहित जीवन दर्शन जीवन को एक ऐसे शिखर पर ले जाता है जहां पर समस्या पूरी तरह से समाधान की तरफ अग्रसर दिखती है। सामान्यतः कामायनी में समस्या से निदान का जो सफर परिलक्षित होता है। उससे यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि जीवन में शायद ही कोई समस्या हो जिसका समुचित समाधान निकालना मुश्किल हो बल्कि इन समस्याओं का समाधान करते-करते एक दुर्बल मनुष्य भी एक ऐसे मुकाम पर पहुंच जाता है जहां पर उसके जीवन में व्याप्त अनगिनत बाधाएं कोमल पुष्पों के समान दिखने लगती है जिस पर चलकर वह अपने जीवन को सफल और सार्थक बनता है। कामायनी महाकाव्य की यही विशेषता जयशंकर प्रसाद जी के उसे विश्व चिंतन धारा को उदित करती है जहां पर जीवन एक ऐसे गंगोत्री से निकलता है जिसमें मनुष्य की अस्तित्व का वास्तविक स्वरूप देखने को मिलता है।

कामायनी में जयशंकर प्रसाद जी ने देवताओं के जीवन दर्शन की तुलना में मानव जीवन दर्शन का निरूपण किया है और सिद्ध किया है कि मानवीय जीवन कुछ मामलों में देवताओं के जीवन से बेहतर है क्योंकि मनुष्यों में यथार्थ की परिकल्पना स्पष्ट दिखाई देती है। मानव जीवन में आने वाले दंश का कारण प्रसाद ने अपनी कामायनी के माध्यम से इस रूप में दिखाने का प्रयास किया है कि देव संस्कृति का निर्माण एकांगी आधार पर हुआ है केवल सुख की आकांक्षा को लेकर उसका विकास हुआ था। प्रकृति पर प्रभुत्व स्थापित करवा अपने उद्देश्य की पूर्ति करना चाहती थी। यही दो कारण प्रसाद जी के मत में देव सृष्टि के विलास के महत्वपूर्ण कारक थे पहले जीवन के केवल सुख पक्ष की प्रवर्धन का प्रयत्न और दूसरा प्रकृति पर नियंत्रण और उसके समस्त सर को स्वार्थ के लिए प्रयोग करने की लालसा यह दोनों ही प्रवृत्तियां देवताओं को कहां से कहां ले गई यह कामायनी के प्रथम सर्ग चिंता में वर्णित है। प्रकृति ने इस अनाचार का बदला लिया। इसलिए प्रसाद जी अपने इस कामायनी में प्रकृति को एक सचेतन शक्ति के रूप में चरितार्थ किया है और यह माना है की प्रकृति की वह निर्वचन शक्ति जो मनुष्य के बढ़ते हुए अहंकार का सामान करती है। प्रसाद की दृष्टि में नियति है। यह नियत ही मनुष्य को समय-समय पर भूलों को याद दिलाती है। प्रसाद का यह नियत सिद्धांत साधारण भाग्य वाद या प्रारब्ध वाद से भिन्न है। नियति एक अज्ञेय शक्ति है किंतु वह जड़ और अज्ञान मूलक नहीं है। उसकी परवाह मानवता और सृष्टि के कल्याण के लिए है। मनुष्य को उसे विद्वेष ना कर उसे पर विश्वास रखते हुए अपना जीवन क्रम निर्धारण करना चाहिए। वह जीवन के प्रति आस्था और अवरोध उत्पन्न करती तथा मानव के अतिचारों को रोक कर विश्व की आवाज प्रकृति का मार्ग प्रशस्त करती है इसे भाग्यवाद नहीं कहा जा सकता है।

कामायनी के प्रतिपाद्य पर गजानन माधव मुक्तिबोध ने एक ऐसा निष्कर्ष प्रस्तुत किया जिससे स्पष्ट होता है कि कामायनी मानव जीवन के उसे सार्वभौमिक दर्शन को प्रस्तुत करता है जहां उसके जीवन का शायद ही कोई पक्ष ऐसा मिलता हो जो इसमें प्रस्तुत न किया गया हो समानत: जीवन का सुख और दुख दोनों ही पक्ष मुख्य रूप से इस महाकाव्य में चरितार्थ होता है जिससे दुख से सुख तक पहुंचाने की एक पूरी जीवन यात्रा इस काव्य के माध्यम से जयशंकर प्रसाद जी प्रस्तुत करते हैं इस संदर्भ में मुक्तिबोध लिखते हैं कि "कामायनी जीवन की पुनर्रचना है- ऐसे जीवन की पुनर्रचना, कि जिस जीवन के प्रति लेखक अत्यंत दीर्घकाल से संवेदनात्मक प्रतिक्रियाएं करता आया, जिसे वह अपने अंत स्थल में अनुभूत करता रहा, मानो वह उसकी निजी गोपनीय संपत्ति हो। लेखक ने उन संचित प्रतिक्रियाओं और अनुभूतियों द्वारा एक फिलासफी तैयार की। लेखक के संवेदनात्मक उद्देश्यों ने स्वान भूत जीवन का कथासार एक फेंटेसी के रूप में बांध दिया और अपने इच्छित विश्वासों को दार्शनिक रूप देते हुए फेंटेसी में प्रस्तुत जीवन समस्या का उन इच्छित विश्वासों के आधार पर समाधान उपस्थित किया। फलत: उसे फेंटेसी में लेखक का पूरा व्यक्तित्व पूरा स्वान भूत जीवन कर पूरा इच्छित दर्शन उतर आया और साथ ही मानव संबंधों का वह क्षेत्र द्योतित हुआ, कि जिस मानव संबंध क्षेत्र में लेखक ने सांस ली ,अपना जीवन जिया और जिसके मूल्यों और आदर्शों को संपादित कर उसे मानव संबंध क्षेत्र की अर्थात अपने वर्ग की दृष्टि ही को दार्शनिकत्व प्रदान किया। अपने जीवन जगत का प्रसाद कृत आकलन किस कोटि का है ,और उसे जीवन जगत की अर्थात उसे मानव संबंध क्षेत्र की कमियों को भाव को मूर्त करने वाले जीवन मूल्य और आदर्श किस प्रकार के हैं यह प्रसाद की इस कामायनी में पूरी तन्मयता के साथ प्रस्तुत हुआ है। [9]

कामायनी के माध्यम से जयशंकर प्रसाद जी ने भारतीय जीवन की एक ऐसी शैली को प्रस्तुत किया है जिसमें पतन से उत्थान का मार्ग दिखाई देते हैं और समस्या से समाधान का भी गतिशील स्वरूप भी दिखता है। इस आधुनिक महाकाव्य में मानव की प्रतिष्ठा और कार्य पद्धतियों में उसकी भावनाओं का संतुलन और उसका उर्जा से युक्त क्रियान्वयन पर जयशंकर प्रसाद जी ने विशेष रूप से ध्यान आकृष्ट किया है। कामायनी में सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह खुल कर सामने आता है कि इसमें जीवनादर्श में कहीं भी रुढ़ि या कृत्रिम गौरव का आभास नहीं है। इसमें आरम्भिक रुपों में श्रद्धा के चरित्र में निहित चंचल बालिका के रुप में उपस्थित होती है:-

भरा था मन में नव उत्साह
सीख लूं ललित कला का ज्ञान;
इधर रह गंधर्वों के देश,
पिता की हूँ प्यारी सन्तान।
घूमने का मेरा अभ्यास
बढ़ा था मुक्त व्योमतल नित्य;
कुतूहल खोज रहा था व्यस्त
हृदय सत्ता का सुन्दर सत्य। [10]

इस चरित्र में किसी प्रकार की अनाकांक्षित गरिमा नहीं है; परन्तु जीवन के कठोर अनुभव उसे सहनशील और गम्भीर बना देते हैं। नारी की स्वाभाविक और मूलवर्ती चेतनाएं उसमें प्रचुर मात्रा में हैं। तभी वह मनु के और निर्दिष्ट जीवन को दिशा ज्ञान देने में समर्थ होती है-

समर्पण लोक सेवा का सार
सजल संसृति का यह पतवार;
आज से यह जीवन उत्सर्ग
इसी पद तल में विगत विकार।
दया, माया, ममता को आज
मधुरिमा लो आगाध विश्वास;
हमारा हृदय रत्न निधि स्वच्छ
तुम्हारे लिए खुला है पास। [11]

© 2024 डॉ. विजय आनन्द मिश्र. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND) https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

कामायनी में जयशंकर प्रसाद जी ने जीवन के साकारात्मक और सुधारात्मक पक्षों पर विशेष रूप से अपना पक्ष रखा है। यही कारण है कि वे जीवन को व्यक्त करते समय सांस्कृतिक दृष्टि के साथ साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण का भी सहारा लेते हैं। कामायनी में स्त्री और पुरुष दोनों ही के मूल्य की चर्चा की गई है जिसमें नारी सुलभ गुणों में आत्मविश्वास पति के व्यक्तित्व को उचित दिशा में प्रभावित और परिचारित करते हुए भी अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व को उसमें लीन कर देने की आकांक्षा, निष्ठा, धैर्य और वात्सल्य आदि गुणों का विशेष रूप से प्रकाशन हुआ है। साथ ही मनु के चरित्र निर्माण के क्रम में पुरुषों के जीवन में व्याप्त आशा -निराशा, साहस, लक्ष्य प्राप्ति करने की लालसा ,महत्वाकांक्षा ,पुरुष होने का अहं इत्यादि मूल्य का चित्रण कामायनी के माध्यम से जयशंकर प्रसाद जी ने किया है। ऐसी स्थिति में कामायनी एक ऐसे काव्य के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत होती है जिसने पुरातन मानवीय संस्कृति एवं नवीन आवश्यक मानवीय संस्कृति का पारस्परिक आदान प्रदान के क्रम में समन्वय स्थापित होता है जिसके परिणाम स्वरूप पुरानी दुनिया की अच्छाइयां और आज की दुनिया की अच्छाइयां एक होकर एक ऐसे मानवीय मूल्य निर्मित कर सकते हैं जिसमें पुरानी जड़ता को छोड़ते हुए और उसमें निहित संजीवनी तत्व को ग्रहण करते हुए नई दुनिया में व्याप्त मांग के आधार पर एक व्यवस्थित समाज के निर्माण में तत्पर होती है।

कामायनी के जीवन दर्शन और मूल्य पर चर्चा करने के क्रम में डी.पी सक्सेना ने अपनी पुस्तक" कामायनी का मूल्यांकन" में कुछ बिंदुओं पर चर्चा की है जो कामायनी के युगीन प्रासंगिकता को प्रस्तुत करते हैं-

1. जब ईश्वर भाव या आत्मा का निर्वासन होगा तो सब लोग दया, क्षमा ,उदारता ,सहानुभूति और प्रेम के उद्गम से अपरिचित हो जाएंगे जिससे कि यह व्यवहार टिकाऊ नहीं होंगे। प्रकृति में विषमता तो स्पष्ट है। नियंत्रण के द्वारा उसमें व्यवहारिक क्षमता का विकास न होगा। भारतीय आत्मवाद की मानसिक समता ही उसे अस्थाई बन सकेगी। यांत्रिक सभ्यता पुराने होते हुए भी ढीली होकर बेकार हो जाएगी। उसमें प्राण बनाए रखने के लिए व्यवहारिक क्षमता के ढांचे में या शरीर में भारतीय साम्यवाद या आतंकवाद की आवश्यकता है। मैं मानता हूं पश्चिम एक शरीर तैयार कर रहा है किंतु उसमें प्राण संचार करना पूर्व के अध्यात्मादियों का काम है। यही पूर्व और पश्चिम का वास्तविक साम्य होगा जिससे मानवता का स्रोत प्रसन्न धारा में बह करेगा।
2. मानव अपने जीवन की रक्षा से ही संतुष्ट नहीं हो सकता। वह पूर्णता के लिए उसका विकास भी चाहता है रक्षा के लिए वह समाज और परिस्थितियों में शांति चाहता है। रक्षा से निश्चित होने पर पोता के लिए विकास पद पर चलते हुए स्वयं परिवर्तन की सृष्टि करता है। इस प्रकार स्थिरता के पश्चात परिवर्तन और परिवर्तन के पश्चात स्थिरता का क्रम विकासशील समाज में निरंतर चला करता है। स्थिरता के बिना परिवर्तन और परिवर्तन के बिना स्थिरता की स्थिति तथा अवसर नहीं उत्पन्न हो सकते। स्थिरता और परिवर्तन में कोई विरोध नहीं वरन जनक संबंध है। परंतु संकुचित या एकांगी दृष्टि वाला व्यक्ति स्थिरता से इतना मोहाशक्त हो जाता है कि मंगलकारी परिवर्तन के स्वयं में आने पर भी उसे ठुकरा देता है। यह उसके जीवन की विडंबना है कि परिवर्तन की परिस्थितियों का स्वयं निर्माण करते हुए भी उसके आने पर आश्चर्य करता है; यह उसकी दुर्बलता है कि परिवर्तन के बिना समाज में दुर्व्यवस्था का अनुभव करते हुए भी उससे कोसों दूर भागना चाहता है।
3. निर्बल या सामान्य कवि प्रभाव रूप में युग की विचारधाराओं का दास होता है। वह जो कुछ अपने चारों ओर देखता है वही चित्रित करता है, किंतु समर्थ कवि युग की समस्याओं का चित्रण ही नहीं उनका सुलझाव भी उपस्थित करता है। वह युग की विचारधाराओं का निरूपण ही नहीं करता प्रत्युत उनका उपयोगी और अनुपयोगी स्वरूप भी बताते चलता है। समस्याओं के समाधान में प्रसाद जी गुप्त जी की तरह नीति वादी नहीं है। गुप्त जी का आदर्श सीधा ,रास्ता सीधा और सीधा समाधान है लिए। जीवन तत्व के वैषम्य का निर्वाह या समाधान में नहीं कर सकते। प्रसाद जी ने कामायनी में श्रद्धा के अहिंसा उपदेश की अतिरिक्त अन्य कहीं भी नीति वादी रूप नहीं धारण किया है। प्रसाद का जीवन पथ विषम, समस्याएं विषम और समाधान भी विषम है।
4. प्रसाद जी की दृष्टि में काम अपने सत्य स्वरूप में प्रकृति का प्रतीक है। जैसे प्रकृति सृष्टि का बहिर्विकास करती है। तद्वत् काम द्वारा विश्वोन्मीलन होता है। इस प्रकार उनकी दृष्टि में काम और प्रकृति में कोई अंतर नहीं है,काम अपने स्वाभाविक रूप में निष्काम रहता है। अतः उसमें आकांक्षा का लेश भी नहीं रहता। काम अपनी विकृत अवस्था में विलास से शासित होता है। काम की स्वाभाविक अवस्था में आकांक्षा या वासना का अत्यंत अभाव रहने के कारण संघर्ष या अशांत का प्रवेश महान नहीं दे पाता। वासना- प्रेरित काम में विलास का शासन होने के कारण काम अपने स्थान से च्युत हो जाता है, अतः वहां अशांत, संघर्ष, उद्वेग आदि का राज्य छा जाता है। कामायनी की कम दृष्टि मानव मात्र को या संदेश देती है कि उसे अपने अस्तित्व का उचित उपभोग या उपयोग करना है तो उसे काम का स्वरूप स्वस्थ रूप में अपनाना पड़ेगा। [12]

इस प्रकार निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि जयशंकर प्रसाद जी अपनी कामायनी में जीवन दर्शन और मूल्य को अत्यंत ही सकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। कामायनी के माध्यम से जयशंकर प्रसाद जी ने चिंता और आनंद के बीच आने वाले विविध मनोभावों को दोनों के बीच की दूरी को कम करने के रूप में देखा है। साथ ही एक विशाल मानव के जीवन दर्शन और उसको निर्मित करने वाले मानवीय मूल्य के बारे में विस्तृत रूप से विवेचना की है। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य उनकी कामायनी में यह उभर कर हमारे सामने उपस्थित होता है कि सभ्यता और संस्कृति का निर्माण किसी भी रूप में हमारे जीवन दर्शन और मूल्य के पारस्परिक समन्वय के कारण ही संभव हो पता है। सामान्यतः जीवन दर्शन जीवन को देखने की एक दृष्टि के रूप में और मूल्य उसे जीवन में प्रदान किए गए कर्मों की पूर्णता के लिए होता है। इस तथ्य को जयशंकर प्रसाद जी ने अपनी कृति कामायनी में वैज्ञानिक दृष्टि के साथ और सामाजिक समरसता के भाव को स्वीकार किए हुए प्रस्तुत किया है। श्रद्धा और ईड़ा की परिकल्पना भाव और बुद्धि का पारस्परिक समन्वय के रूप में देखा जाता है। सामान्य मानवीय धरातल पर भाव और बुद्धि का समन्वय करना अत्यंत ही कठिनतम कार्यों में से एक है लेकिन जीवन का सकारात्मक एवं उपदेशात्मक स्वरूप भावना और बुद्धि के पारस्परिक आत्मसात के साथी परिपूर्ण होता है क्योंकि भावना जहां एक मनुष्यता को निर्मित करने में सहयोगी होती है वहीं पर बुद्धि मनुष्य के विकास का द्योतक है। अतः श्रद्धा और बुद्धि दो अलग भाव होते हुए भी एक दूसरे से मिलने के उपरांत एक ऐसी मनुष्य का निर्माण करती है जो आध्यात्मिक एवं भौतिक दोनों ही दृष्टिकोण से सशक्त और सफल अवस्था में दिखाई देता है। कामायनी में मनु अर्थात मनुष्य को चिंता से आनंद की यात्रा करने में इन भावनाओं का विशेष योगदान है। साथ ही इसके अलावा तेरह अन्य भावनाएं जिनका चित्रण कामायनी में किया गया है वह सभी अलग-अलग स्वरूप की होने के बावजूद मनुष्य के विशाल जीवन दर्शन को स्थापित करने एवं मानवीय मूल्यों के परिष्करण के लिए सहगामी होतें है जिनका वर्णन कामायनी में किया गया है। अंत में जयशंकर प्रसाद जी की कामायनी का अध्ययन करने के उपरांत इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि इसमें व्याप्त जीवन दर्शन और मूल्य एक ऐसी मानवता और सभ्य समाज के निर्माण का कारक बन सकती है जो आध्यात्मिक रूप से भी सशक्त हो और भौतिक रूप से भी मजबूत हो। कामायनी का यह संदेश समाज के अंदर इस तरह की समन्वय भावना को स्थापित करने का एक सफल और सार्थक मंत्र साबित हो सकता है।

© 2024 डॉ. विजय आनन्द मिश्र. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND) https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. नंद दुलारे, बाजपेयी, जयशंकर प्रसाद, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2013, पृष्ठ संख्या-70
2. वही, पृष्ठ संख्या 7
3. वही, पृष्ठ संख्या 72
4. वही, पृष्ठ संख्या 73
5. जयशंकर प्रसाद, कामायनी , श्रद्धा सर्ग, मयूर पेपर बैक्स, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 17
6. वही पृष्ठ संख्या 58
7. नंद दुलारे बाजपेयी, जयशंकर प्रसाद, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2013, पृष्ठ संख्या 75
8. जयशंकर प्रसाद, कामायनी, श्रद्धा सर्ग, मयूर पेपर बैक्स, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 17
9. गजानन माधव मुक्तिबोध, कामायनी एक पुनर्विचार, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2012, पृष्ठ संख्या 18
10. नंद दुलारे बाजपेयी, जयशंकर प्रसाद, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2013, पृष्ठ संख्या 80
11. वही।
12. डी. पी.सक्सेना, कामायनी का मूल्यांकन, प्रिया प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002, पृष्ठ संख्या 71

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

.

© 2024 डॉ. विजय आनन्द मिश्र. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND) https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/